सृजन से संवाद

राजेश पाल की कविता
सामाजिक यथार्थ और प्रतिरोध की चेतना

डॉ. नरेंद्र वाल्मीकि
सहारनपुर, उत्तर प्रदेश
मो0- 9720866612

साहित्य विचारों की सबसे सशक्त अभिव्यक्ति है, जो समाज को दिशा देने की सामर्थ्य रखता है। विचार ही वह मूलभूत शक्ति है जो दुनिया को बदलने की ताकत देता है। यह ताकत साहित्यकार की कलम में तब और अधिक प्रभावशाली हो जाती है जब वह सामाजिक कुरीतियों, अन्याय और विषमता के विरुद्ध मुखर होता है। हिंदी साहित्य में डॉ. राजेश पाल का नाम एक ऐसे ही प्रतिबद्ध साहित्यकार के रूप में सामने आता है, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त सामाजिक असमानता, जातिवाद, दलित उत्पीड़न और फासीवादी प्रवृत्तियों के खिलाफ गहरी चेतना और सवालों को स्वर प्रदान किया है।

राजेश पाल न केवल कवि हैं, बल्कि सामाजिक यथार्थ के सजग प्रवक्ता भी हैं। वे अपने काव्य में केवल कल्पना नहीं रचते, बल्कि यथार्थ की कठोरता को प्रश्नों और प्रतिरोध की भाषा में प्रस्तुत करते हैं। उनके चार कविता संग्रह :- 'पानी भीतर आग', 'तुम भी सोचो', 'पानी का नहीं देश' और 'आजादी में आजादी' तथा ग़ज़ल संग्रह 'सभी हैं बाजार खेत से' उनके व्यापक साहित्यिक हस्तक्षेप का प्रमाण हैं।

उनकी कविता 'जागो! तुम्हारे लिए लोग लड़ रहे हैं...' में कवि जन-साधारण को उसकी निष्क्रियता से झकझोरता है और उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करने का आह्वान करता है। यह कविता उनके सामाजिक सरोकारों की स्पष्ट घोषणा है:

जागो! तुम्हारे लिए लोग लड़ रहे हैं
इस पसीने में
तुम्हारे हिस्से का जो नमक है।
इस खून में तुम्हारे हिस्से की ऑक्सीजन के लिए
सड़कों पर लोग तुम्हारे लिए लड़ रहे हैं।

यह कविता प्रतीकात्मकता और प्रत्यक्षता दोनों से युक्त होकर पाठक को सीधे संबोधित करती है।

राजेश पाल की कविताओं का प्रमुख सरोकार जातिवाद के विरुद्ध संघर्ष है। वे वर्णव्यवस्था और ब्राह्मणवादी वर्चस्व पर तीखा प्रहार करते हैं। 'सभ्यता का अपमान' कविता में दलितों के साथ होने वाली अमानवीय घटनाओं का वर्णन करते हुए कवि न केवल समाज को

कठघरे में खड़ा करता है बल्कि उसकी मौन स्वीकृति को भी उजागर करता है:

एक इंसान दूसरे इंसान के साथ
कैसे कर सकता है ऐसी क्रूरता
कि वह दलित को
उसके जूते में उसका मूत पिलाएँ..

यह कविता केवल आक्रोश नहीं है, बल्कि सभ्यता के खोखलेपन का दस्तावेज भी है।

राजेश पाल सत्ता संरचनाओं और उसकी जातिगत जड़ों को उजागर करते हैं। उनकी कविता 'व्यवस्था में गाँव' में वे सामाजिक व्यवस्था को एक सुनियोजित साजिश के रूप में चिन्हित करते हैं:

हम बँट गये हैं
बँट कर घट गये हैं
व्यवस्था साजिश थी
साजिश को तोड़ दो
खुद को जोड़ दो

यह कविता प्रतिरोध के लिए एक वैचारिक रणनीति का प्रस्ताव भी है।

'अच्छे आंबेडकर' कविता में कवि राजेश पाल ब्राह्मणवादी सहानुभूति की आलोचना करते हुए उसे दलित संघर्ष के मुकाबले अपर्याप्त मानते हैं। कवि सहानुभूति नहीं, सक्रिय भागीदारी की मांग करता है:

इसलिए अच्छे आंबेडकर
तुम्हारी कोरी सहानुभूति नहीं
अधिकार के पक्ष में लड़ाई चाहिए
हमें अब अपना अधिकार चाहिए।

यह कविता सामाजिक न्याय के विमर्श में उत्प्रेरक की भूमिका निभाती है।

राजेश पाल की कविताओं में सामंती सोच का विरोध भी तीव्र रूप से प्रकट होता है। दिल्ली विश्वविद्यालय की एक घटना के माध्यम से वे सत्ता की चुप्पी के बावजूद प्रतिरोध की गूंज सुनने का साहस भरते हैं:

सुनो सामंतों! ध्यान से सुनो !!
तमाम सत्ता और
कलम की चुप्पी के बावजूद
तुम्हें प्रतिरोध की आहटें
सुनाई दे रही है...

यह एक सीधा चेतावनी-पत्र है जो व्यवस्था को चुनौती देता है।

राजेश पाल की कविता 'तुम्हारे सवाल छद्म हैं' आजादी और सामाजिक समानता के उस गहरे अंतर्विरोध को उजागर करती है, जिसे अक्सर मुख्य-धारा की राजनीतिक चर्चा में अनदेखा कर दिया जाता है। यह कविता उन सवालों पर तीखा प्रहार करती है, जो सतह पर तो समानता की बात करते हैं, लेकिन उनके पीछे की मंशा और व्यवस्था की जड़ें गहराई से सामंती और जातिवादी सोच में धँसी होती हैं।

तुम्हें नहीं हुआ सहन हमारा
आंखें मिलाकर बात करना
आजादी में भी नहीं मिली
आजादी हमें।

गुलामी की उस निरंतरता को दर्शाती हैं, जो स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी समाज के एक बड़े हिस्से के जीवन में बनी रही। यहाँ कवि यह स्पष्ट करते हैं कि राजनीतिक आजादी प्राप्त होने के बावजूद सामाजिक स्तर पर जो असमानताएँ और भेदभाव थे, वे जस के तस कायम हैं। कविता में यह तीखा प्रश्न उठाया गया है

तुम ही पूछते हो
पिचहत्तर साल की
आजादी में भी
क्यों नहीं आए तुम बराबर?

यह प्रश्न केवल एक व्यंग्य नहीं, बल्कि उस मानसिकता की पोल खोलता है जो तथाकथित 'मुख्यधारा' में दलित, शोषित और वंचित वर्गों की अनुपस्थिति पर सवाल उठाती है, जबकि उसी व्यवस्था ने उन्हें वहाँ पहुँचने से रोके रखा।

राजेश पाल इस कविता में समाज की उस कठोर सच्चाई को रेखांकित करते हैं कि सामाजिक स्वतंत्रता के बिना कोई भी स्वतंत्रता अधूरी है।

सामाजिक आजादी के बिना
नहीं मिल सकती है
कोई भी आजादी

यह पंक्ति कविता का केंद्रीय कथ्य बन जाती है। वह यह रेखांकित करती है कि सामाजिक विषमता के रहते हुए लोकतंत्र और स्वतंत्रता केवल दिखावा बन कर रह जाते हैं। कविता का अंतिम हिस्सा–

सामंती लोग निरंतर कोशिश में हैं
हजारों साल पुराना यह पिंजरा
मजबूत बना रहे
कभी टूट ना पाए।

इस बात की चेतावनी है कि एक संगठित और सूक्ष्म स्तर पर काम कर रही शक्तियाँ आज भी सामाजिक जड़ताओं को बनाए रखने में लगी हुई हैं। उनका उद्देश्य उस 'पिंजरे' को टूटने से बचाना है, जिसमें पीढ़ियों से वंचित वर्गों को क़ैद कर रखा गया है।

'तुम्हारे सवाल छद्म हैं' केवल एक कविता नहीं, बल्कि एक सामाजिक दस्तावेज है–एक प्रतिरोध का स्वर है जो उन आवाजों की तरफ संकेत करता है जिन्हें दशकों से दबाया गया। यह कविता हमसे आत्ममंथन की माँग करती है: क्या हमने सच में सभी को आजादी दी है, या फिर हम अब भी कुछ लोगों

को पिंजरे में रखकर 'स्वतंत्रता' का जश्न मना रहे हैं? यह रचना हमारे सामने न केवल प्रश्न खड़े करती है, बल्कि हमें सामाजिक न्याय के संघर्ष में एक सक्रिय भागीदारी की ओर भी आमंत्रित करती है।

राजेश पाल की रचनाओं में केवल प्रतिरोध नहीं है, बल्कि पुनर्निर्माण की आकांक्षा भी है। वे सपनों, उम्मीदों और संघर्षों की बात करते हैं। 'हाँक भी क्रांति है' जैसी कविताओं में कवि पाठकों को निराशा में भी आशा की आवाज बुलंद करने को प्रेरित करता है:

हर काम कोशिश से होता है
विश्वास से जुड़ता है
मैं कहता हूँ
घोर निराशा में भी आवाज दो
लोग जरूर आएंगे...

यह कविता न केवल प्रेरणादायी है, बल्कि जनांदोलनों की नींव को मजबूत करने वाली भी है।

डॉ. राजेश पाल की कविताएँ समकालीन हिंदी कविता में सामाजिक यथार्थ का जीवंत दस्तावेज हैं। वे केवल काव्य सौंदर्य के लिए नहीं लिखते, बल्कि सामाजिक बदलाव के लिए लिखते हैं। उनका साहित्य प्रतिरोध की संस्कृति को पोषित करता है, उत्पीड़ितों की आवाज को मंच देता है और सामाजिक क्रांति के लिए विचारों की मशाल जलाता है। वे हमें याद दिलाते हैं कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता और परिवर्तन का सशक्त माध्यम है। डॉ. राजेश पाल का साहित्य इस युग का जरूरी हस्तक्षेप है।❑

पृष्ठ सं. 54 का शेष

अजय पंवार जी की शिकायत करने लगे–'ये जनरल कैटेगिरी के लोगों का पिछलग्गू है। देखों! कैसे? घुट-घुटकर बात कर रहा है।'

'अरे! ये तो विजय पंवार का छोटा भाई अजय पंवार है। ये तो जनरल से है। तुम्हें क्या कष्ट है। वो किसी से भी बात करे।'

अगले दिन कुछ लोग सैमिनार में नहीं गये। सीधे स्कूल गये। वहां जाकर अजय पंवार की सर्विस बुक ढूंढी, नहीं मिली। शायद अभी बनी नहीं है। फिर पर्सनल फाइल ढूंढी वह भी नहीं मिली। पता लगा कि ज्वाईनिंग वाले दिन ही फोटो स्टेट कराने के बहाने से ले गया था। आज तक नहीं लाया। लोग डिस्ट्रिक्ट पहुंच गये। यूनियन के लोगों के माध्यम से लिस्ट निकलवाई गई। कैटिगरी देखी तो अजय पंवार के नाम के आगे कैटिगिरी में एस. सी. ही लिखा था। यूनियन के नेता मेहताब सिंह बोलें–'यार तुम भी अजीब हो। मास्टर होकर ऐसी छोटी हरकत करते हो।'

लोगों ने कहा–'बात तो तुम ठीक कह रहे हो पर ये ओछी हरकतें हमने आप जैसे लोगों से ही सीखीं हैं।'

अब बारी थी अनुसूचित जाति के हितैषियों की। उन्होंने भी किसी संगठन के माध्यम से अजय पंवार की शिकायत अनूसूचित जाति एवं जनजाति आयोग में कर दी। सवर्ण जाति का व्यक्ति अनूसूचित जाति का हक मारकर बैठा है। विभाग की ओर से काफी टाल-मटौल और लीपा पोती की गई। शिकायत जायज थी फिर भी इंक्यवारी महीनों लटकी रही। कभी भी एक्चुअल रिपोर्ट नहीं लगाई गई। लोग कोर्ट चले गये। फिर वही बहाने बाजी की गई। संगठन के लोगों ने कोर्ट में इस बार पक्के सबूत पेश कर दिये। अजय पंवार का जाति प्रमाण-पत्र और उसके भाई विजय पंवार के सभी आवश्यक डाक्यूमेंट्स।

गवाही के रूप में माता-पिता को भी कोर्ट में पेश होना पड़ा। डाक्यूमेंट्स बता रहे थे कि दोनों सगे भाई हैं। दोनों शिक्षा विभाग में अध्यापक हैं। बड़ा भाई जनरल कैटेगिरी से और छोटा भाई ने सैड्यूल कास्ट कैटिगिरी से नौकरी पाई है। ये कैसे हो सकता है? बात बिगड़ती देख अजय पंवार के वकील ने उसकी माँ के कान में कुछ कहा।

फैसले का दिन था। कोर्ट खचाखच भरा था। व्हिटनैस बॉक्स में अजय पंवार की मां को बुलवाया गया।

माँ के निवेदन पर कोर्ट में गवाही के समय केवल वकील ही विद्यमान रहे। अजय पंवार की माँ ने अपने पति को भी आँख के इशारे से बाहर जाने को कहा।

माँ के सामने धर्म संकट था। सच कहे तो बेटे की नौकरी चली जायेगी और झूठ बोलती है तो बुढापे में इज्जत पर बट्टा। अंत में आदमी दिमाग से सोचता है और कई बार आर्थिक आधार पर फैसले लेता है।

जज के सम्मुख खड़ी होकर गर्दन नीची करके अजय पंवार की माँ बोली–'जी, अजय का बाप नट था!'

जो ऊसूलों के साथ थे और सही थे। वो सब के सब हार गये।❑